"दस साल – विकास बेमिसाल"

वर्ष 2005 से 2015 के मध्य पशुपालन विभाग की उपलब्धियाँ

पशुपालन विभाग
मध्यप्रदेश

वर्ष 2005 से 2015 के मध्य पशुपालन विभाग के मुख्य विभागीय कार्यक्रमों के संबंध में प्रगति/उपलब्धि की जानकारी

- वर्ष 2005 में प्रदेश का दुग्ध उत्पादन 5.50 मिलियन टन था जो कि वर्ष 2015 में बढ़कर 10.78 मिलियन टन हो गया है एवं विगत दस वर्षो में दुग्ध उत्पादन की वृद्धि दर 6.96 प्रतिशत रही है ।

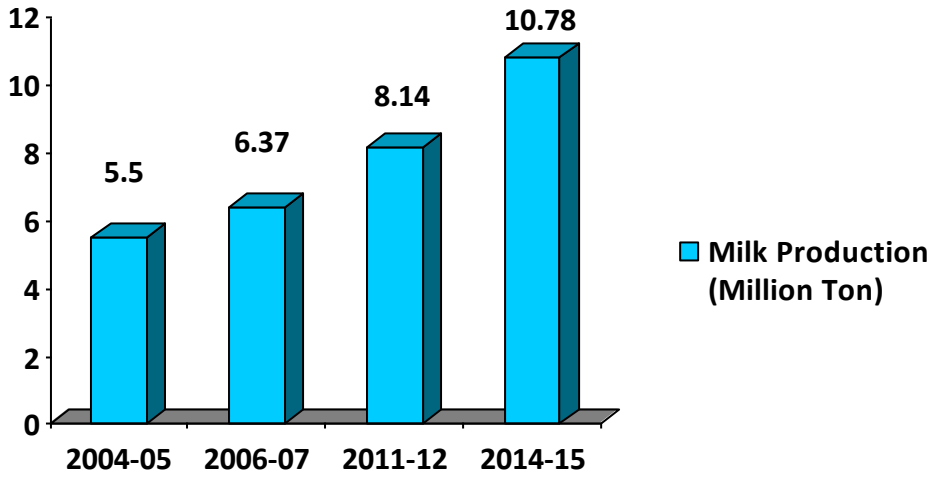

- वर्ष 2004–05 से वर्ष 2011–12 तक प्रदेश दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में राष्ट्र में सातवे स्थान पर रहा किन्तु वर्ष 2012–13 में महाराष्ट्र से आगे निकलकर राष्ट्र में छटवे स्थान पर तथा वर्ष 2014–15 में म.प्र., आन्ध्रप्रदेश एवं पंजाब से आगे निकलकर चौथे स्थान पर आ गया
- प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि के बावजूद प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता में महत्वपूर्ण वृद्धि परिलक्षित हुई है । वर्ष 2005 में प्रदेश की प्रति व्यक्ति प्रति दिन दुग्ध उपलब्धता 233 ग्राम थी, जो कि वर्ष 2015 में बढ़कर 383 ग्राम हो गयी है । वर्तमान में प्रदेश की प्रति व्यक्ति प्रति दिन दुग्ध उपलब्धता राष्ट्रीय औसत 315 ग्राम एवं भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की अनुशंसा 280 ग्राम प्रतिदिन से अधिक है।

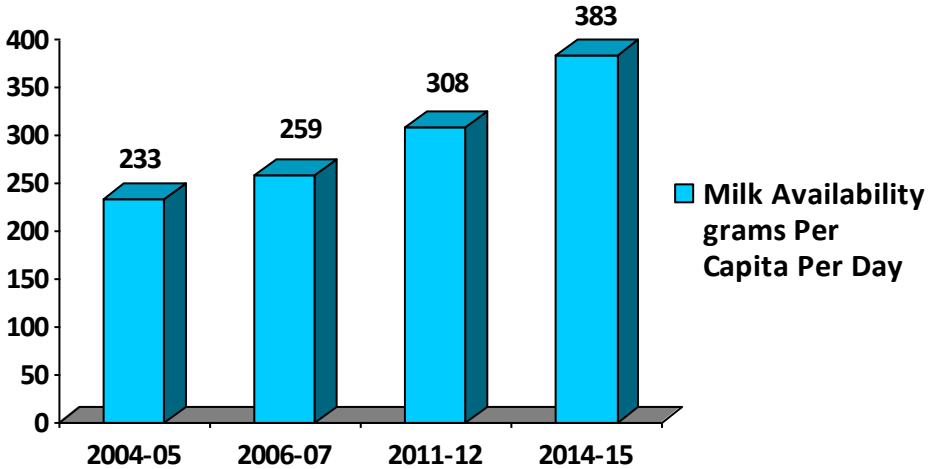

- वर्ष 2005 में एक ओर जहाँ प्रदेश में 565 पशु चिकित्सालय संचालित थे वहीं 2015 में इनकी संख्या बढ़कर 1008 हो गयी है । विगत दस वर्षो में 443 पशु औषधालयों का पशु चिकित्सालयों में उन्नयन तथा 270 नवीन पशु औषधालयों की स्थापना की गई है ।
- पशुपालकों को एक ही भवन के अंतर्गत आधुनिकतम जाँच व उपचार की सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 48 जिला स्तरीय पशु चिकित्सालयों को पॉली क्लीनिक्स का स्वरूप दिया गया है। इन पॉली क्लीनिक्स में विभिन्न विषयों के विषय विशेषज्ञों को पदस्थ किया गया है एवं निदान हेतु आधुनिक मशीनें एवं उपकरण उपलब्ध कराए गए है।
- प्रदेश में रोग निदान को बेहतर एवं त्वरित बनाने हेतु प्रदेश के 20 अतिरिक्त जिलों में रोग अन्वेषण प्रयोगशाला की स्थापना की गई है।
- प्रदेश के सुदूर क्षेत्रों के पशुपालकों को सूचना तकनीक के माध्यम से कम लागत में घर पहुँच पशु उपचार सुविधा उपलब्ध कराए जाने के उद्देश्य से ई–वेट परियोजना वर्ष 2012–13 से प्रारंभ की गई है ।
- प्रदेश के दूरस्थ आदिवासी बाहुल्य ग्रामीण अंचलों में ग्राम पहुँच पशु चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वर्ष 2011–12 में प्रदेश के 40 आदिवासी विकासखण्डों में अनुबंध के आधार पर चल पशु चिकित्सा इकाइयों का संचालन प्रारम्भ किया गया था एवं वर्ष 2013–14 में इनका विस्तार समस्त 89 आदिवासी विकासखण्डों में किया गया।
- नई चिकित्सीय संस्थाओं को खोलने, पुरानी संस्थाओं के उन्नयन तथा नई तकनीक यथा ई–वेट प्रोजेक्ट के प्रयोग से पशु चिकित्सा सेवाओं का कव्हरेज जो कि वर्ष 2005 में 42.00 प्रतिशत था वर्ष 2015 में बढ़कर 63.20 प्रतिशत हो गया है। पशु चिकित्सा कव्हरेज बढने के फलस्वरुप एक ओर जहॉ वर्ष 2005 में 38.53 लाख पशु उपचार एवं 70.79 लाख टीकाकरण होता था वहीं वर्ष 2014–15 में 96.88 लाख पशु उपचार एवं 207.08 लाख टीकाकरण किया गया है।

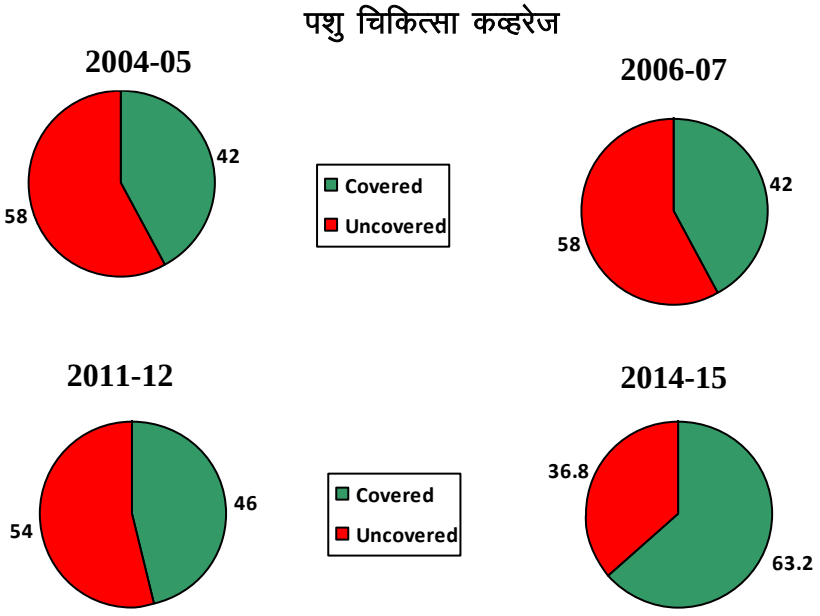

- प्रदेश के टीकाद्रव्य कार्यक्रम को सुदृढ करने एवं पशु स्वास्थ्य रक्षा को बेहतर ''बनाने हेतु पशु स्वास्थ्य एवं जैविक उत्पाद संस्थान मॅहू का सुदृढीकरण जी. एम.पी. मानकों के अनुरूप वर्ष 2012–13 से प्रारम्भ किया गया है ।
- नस्ल सुधार हेतु प्रदेश में पशु प्रजनन कार्यक्रम का सुदृढ़ीकरण एवं विस्तार किया जा रहा है । अतिरिक्त पशु चिकित्सा संस्थाएं / निजी कृत्रिम गर्भाधान कार्यकर्ता/एकीकृत पशुधन विकास केन्द्र द्वारा कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा प्रारंभ करते हुए कृत्रिम गर्भाधान कव्हरेज जो कि वर्ष 2005 में 24 प्रतिशत् था उसे बढाकर वर्ष 2015 में 52.37 प्रतिशत किया गया है। कृत्रिम गर्भाधान का कव्हरेज बढने से एक ओर वर्ष 2005 में जहॉ 4.73 लाख कृत्रिम गर्भाधान होता था वहीं वर्ष 2015 में 23.87 लाख कृत्रिम गर्भाधान किया गया है।

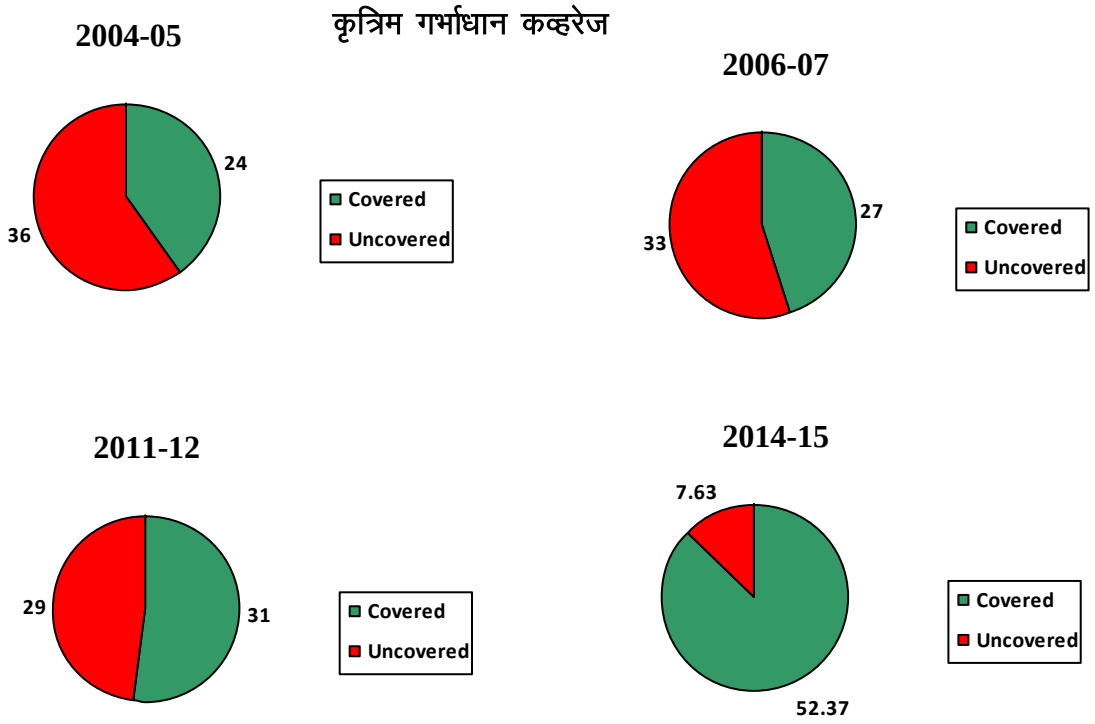

- भोपाल में मध्यप्रदेश का प्रथम राज्यस्तरीय पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की गई है।
- प्रदेश में प्राकृतिक गर्भाधान कार्यक्रम क्रियान्वयन एवं पशु उत्प्रेरण के माध्यम से नस्ल सुधार एवं दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हेतु विभिन्न योजनाएं विगत दस वर्षो में प्रारम्भ की गई हैं । ग्रामीण क्षेत्रों की स्थानीय/अवर्णित/श्रेणीकृत गौवंशीय नस्ल सुधार हेतु महत्वाकांक्षी नंदीशाला योजना का शुभारंभ वर्ष 2005–06 में किया गया इसी तरह पशुपालकों को डेयरी एवं बकरी इकाई प्रदाय करने हेतु विभागीय डेयरी एवं बकरी पालन योजना वर्ष 2008–09 से प्रांरभ की गई है।

- प्रदेश की महत्वपूर्ण नस्लों के संवर्धन एवं सरंक्षण हेतु पशु प्रजनन प्रक्षेत्र भदावरी (भैंसवंश) शिवपुरी, पशु प्रजनन प्रक्षेत्र केनकथा (गौवंश) पवई, जिला पन्ना, पशु प्रजनन प्रक्षेत्र गिर (गौवंश) बॉसाखेडी, जिला मन्दसौर, बकरी प्रजनन प्रक्षेत्र, ठीकरी जिला बड़वानी, पशु प्रजनन प्रक्षेत्र जाफरावादी (भैंसवंश) बावई, जिला होशंगाबाद, बकरी प्रजनन प्रक्षेत्र, मिनौरा, जिला टीकमगढ़ (जमनापारी नस्ल) स्थापित किया गया है।
- भारतीय गौवंश के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए मध्य प्रदेश शासन द्वारा मध्य प्रदेश गौपालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड का गठनवर्ष 2004 में किया गया इसके अंतर्गत वर्तमान में पूरे प्रदेश में 628 गौशालाऐं पंजीकृत होकर क्रियाशील हैं।
- भारतीय गौवंश संरक्षण व संवर्धन एवं जैविक खाद, कीटनाशक व गौमूत्र औषधियों पर शोध तथा इनके सुचारू विपणन के लिए ग्राम सालरिया, जिला आगर में गौ अभ्यारण्य की स्थापना वर्ष 2013–14 में की गई है। गौ अभ्यारण्य में लगभग 5000 निःशक्त बेसहारा गौवंश को रखे जाने का प्रावधान किया जा रहा है साथ ही नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय जबलपुर में पंचगव्य निर्माण परियोजना स्वीकृत की गई है, जिसके अंतर्गत गौमूत्र एवं गोबर से कीटनाशक एवं अन्य उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं।
- प्रदेश में प्रथम बार कृषि क्षेत्रक गतिविधियों के विकास एवं गरीबी उन्नमूलन में पशुपालन के महत्व के दृष्टिगत पशुपालन विभाग द्वारा मध्यप्रदेश पशुधन विकास नीति 2011 तैयार की गई है। इस नीति में कृषि जलवायु तथा आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों पर आधारित कार्यक्रम बनाये जाने पर जोर दिया गया है साथ ही पशुधन विकास कार्यक्रमों का वातावरण में प्रभाव, समान अवसर, महिलाओं को सीधा लाभ तथा स्थिरता जैसे मुद्दों को भी समाहित किया गया है ।
- स्थानीय नस्ल को बढ़ावा देने एवं उच्च आनुवांशिक एवं उत्पादन वाले पशुओं का डाटाबेस एकत्रित करने के लिए एवं भारतीय देशी गौवंश को प्रोत्साहित करने के लिए गोपाल पुरस्कार योजना वर्ष 2011–12 में एवं वत्स पालन प्रोत्साहन योजना वर्ष 2012–13 में प्रारम्भ की गई ।
- प्रदेश में पशु पालन के क्षेत्र में शिक्षा को बढ़ावा देने एवं पशुपालन से संबंधित अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से वर्ष 2007 में प्रदेश में रीवा में नवीन पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय की स्थापना एवं वर्ष 2009 में पशु चिकित्सा विज्ञान विश्व विद्यालय,जबलपुर की स्थापना की गई है साथ ही वर्ष 2011–12 से पशु चिकित्सा विज्ञान विश्व विद्यालय अंतर्गत जबलपुर , महू , रीवा , भोपाल एवं मुरैना में पशुपालन विज्ञान में द्विवर्षीय डिप्लोमा प्रारंभ किया गया है।
- प्रदेश के नस्ल सुधार कार्यक्रम के सुदृढ़ीकरण, विस्तारीकरण एवं आधुनिकीकरण के उद्देश्य से वर्ष 2012–13 में उच्च आनुवांशिक गुण वाले वत्सों के उत्पादन हेतु भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक प्रयोगशाला की स्थापना की गई है । दिनांक 19.

04.2015 को इस तकनीक के सफल प्रयोग से भ्रूण प्रत्यारोपण कर प्रदेश का प्रथम वत्स प्राप्त हुआ तथा ''**श्यामा**'' प्रदेश की पहली सेरोगेटेड गाय बनी ।

- केन्द्रीय वीर्य संस्थॉन भदभदा भोपाल का सुदृढीकरण करते हुए फ्रोजन सीमन डोजेज की उत्पादन क्षमता 8.00 लाख से बढ़ाकर 16.31 लाख प्राप्त की गई। वर्ष 2011–12 में भारत शासन के द्वारा गठित CMU (केन्द्रीय पर्यवेक्षण इकाई) ने केन्द्रीय वीर्य संस्थॉन भदभदा को "B" Grade सीमन स्टेशन के अन्तर्गत सूचीबद्ध किया गया तथा यह BIS से ISO 9001: 2008 Certificate प्राप्त संस्थान है।
- केन्द्रीय वीर्य संग्रहालय, भदभदा, भोपाल पर कृत्रिम गर्भाधान हेतु फ्रोजन सीमेन स्ट्रा के वितरण एवं स्टोरेज के लिए प्रभावी एवं कम लागत में कोल्ड चेन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रदेश में चार स्थानों पर भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर एवं सागर में वर्ष 2012–13 से वर्ष 2014–15 के मध्य तरल नत्रजन उत्पादन संयत्र की स्थापना की गई है ।
- पशु प्रजनन प्रक्षेत्र, कीरतपुर में वर्ष 2012–13 में बकरी प्रजनन प्रक्षेत्र तथा बकरी पालकों के लिये मानव संसाधन प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई है। इसी प्रकार से वर्ष 2013–14 में कीरतपुर में मुर्रा नस्ल की भैसों के प्रजनन केन्द्र की स्थापना भी गई है।
- पशु प्रजनन प्रक्षेत्र, कीरतपुर में यूरिया मोलिसिस मिनरल ब्लॉक संयंत्र की वर्ष 2013–14 स्थापना की गई है। वर्ष 2014–15 से कीरतपुर में 100 मैट्रिक टन प्रतिदिन क्षमता के स्वचलित पशु आहार संयंत्र की स्थापना की जा रही है, जो मध्यप्रदेश का प्रथम स्वचलित पशु आहार संयंत्र होगा।
- बुल मदर फार्म, भदभदा, भोपाल पर MPLPDC-IGNOU Study Center की स्थापना की गई है। जहां पर दो माह का अवेयरनेस प्रोग्राम आन डेयरी फार्मिंग, 6 माह का पोल्ट्री फार्मिंग सर्टिफिकेट एंव 3 माह का निजी कृत्रिम गर्भाधान कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं।
- राष्ट्रीय गौ–भैसंवशीय प्रजनन परियोजना तथा राष्ट्रीय गौ–भैंस प्रजनन कार्यक्रम योजना के अन्तर्गत अभी तक 2000 से अधिक निजी कृत्रिम गर्भाधान कार्यकर्ताओं को तथा 500 से अधिक मैत्री को कृत्रिम गर्भाधान का प्रशिक्षण दिया गया है। उपरोक्त सभी कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं को निःशुल्क ए.आई.किट एव उपकरण का प्रदाय किए गए हैं।
- वर्ष 2014–15 में ''राज्य पशु प्रजनन केन्द्र'' की स्थापना बुल मदर फार्म, भदभदा, भोपाल पर की गई है।
- वर्ष 2006–07 से प्रदेश में दुधारू पशु बीमा योजना प्रांरभ की गई। योजना प्रांरभ में चयनित 6–7 जिलों से प्रारंभ की गई तथा जिनका विस्तार 20 जिलों तक किया गया। इस बीमा योजना के अन्तर्गत लगभग 2.00 लाख पशुओं का बीमा किया गया

तथा 10,000 से अधिक मृत पशुओं के दावा प्रकरणों का भुगतान किया गया। वर्तमान में यह योजना प्रदेश के समस्त जिलों में क्रियान्वित की जा रही है ।

- भारत सरकार, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्यपालन विभाग के द्वारा दिनांक 11.03.2015 को प्रदेश में नेशनल कामधेनू ब्रीडिंग सेन्टर की स्थापना हेतु स्वीकृति जारी की गई है।
- वर्ष 2005 से प्रदेश में कार्यशील सहकारी समितियों की संख्या 3202 से बढ़कर वर्ष 2015 में 6300 समितियॉ हो गई हैं।

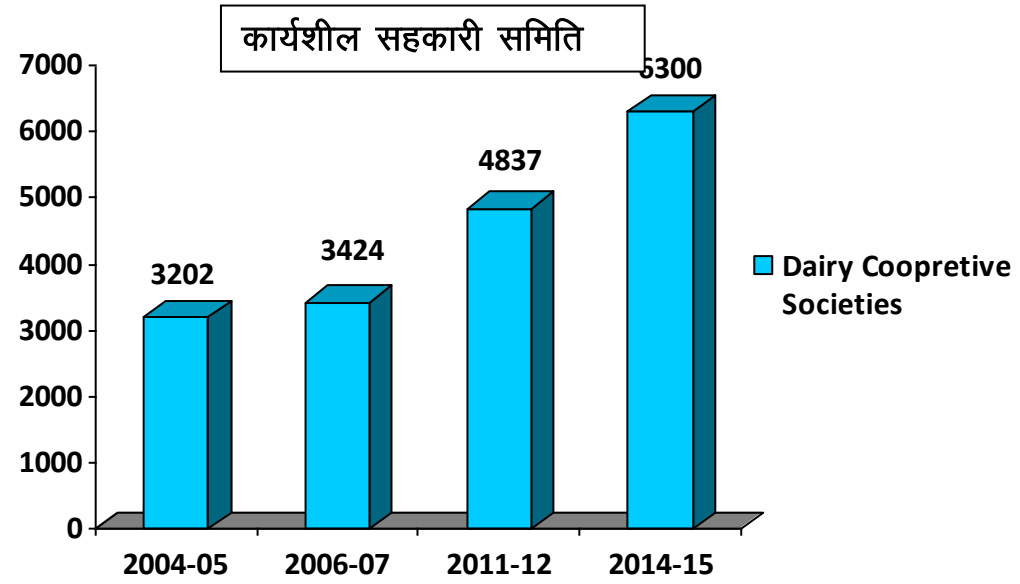

- वर्ष 2005 से कार्यशील समितियों के सदस्य 1,47,327 से बढ़कर वर्ष 2015 में 2,37,013 सदस्य हो गए हैं। इनमें 73 प्रतिशत पिछड़े, अनुसूचित जाति एवं जनजाति सदस्य शामिल हैं ।
- वर्ष 2005 से प्रदेश में महिला सदस्यता 35,291 से बढ़कर वर्ष 2015 में 87,046 महिला सदस्यता हो गई है ।
- वर्ष 2005 से औसत दुग्ध संकलन 10.83 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि के साथ 3.94 लाख किलोग्राम प्रतिदिन से बढ़कर वर्ष 2015 में 11.02 लाख किलोग्राम प्रतिदिन हो गया ।

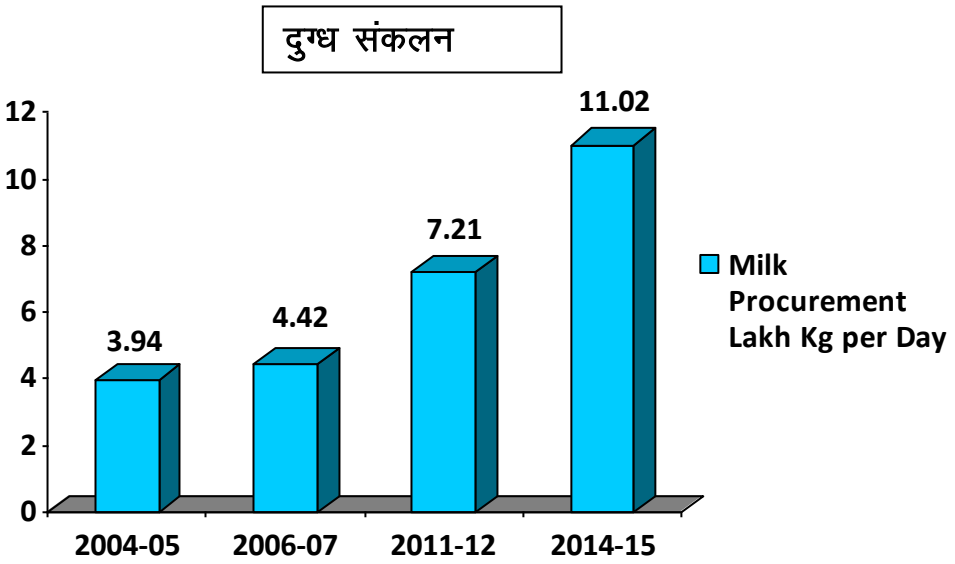

- वर्ष 2005 से औसत कुल दुग्ध विक्रय 3.81 लाख लीटर प्रतिदिन से बढ़कर वर्ष 2015 में 8.82 लाख लीटर प्रतिदिन हो गया ।

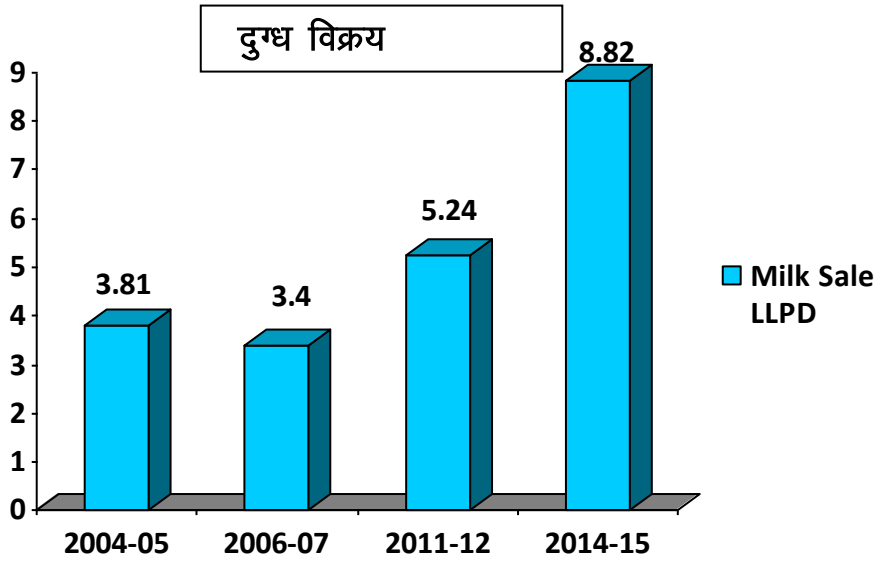

- वर्ष 2005 से कुल टर्न ओव्हर 19.75 वार्षिक वृद्धि के साथ रू. 265 करोड़ से बढकर वर्ष 2015 में रू. 1607 करोड़ हो गया।
- दुग्ध संघों के माध्यम से शहरी धन का प्रवाह ग्रामीण क्षेत्र में होता है । वर्ष 2005 के दौरान दुग्ध संघों द्वारा रू. 164.62 करोड़ की राशि ग्रामीण क्षेत्र के दुग्ध उत्पादकों को दुग्ध क्रय मूल्य के रूप में दी गयी जो वर्ष 2015 में रू. 1243.66 करोड़ हो गई है। दुग्ध संघों द्वारा अपनी सकल प्राप्तियों की 75 प्रतिशत से अधिक राशि दुग्ध उत्पादकों को हस्तांतरित की जा रही है।
- वर्ष 2005 के दौरान दुग्ध संघों का संतुलित पशु आहार विक्रय 45.51 हजार मै.टन था जो वर्ष 2015 के दौरान बढ़कर 115.48 हजार मै.टन हो गया है।
- दुग्ध संकलन में पारदर्शिता लाने के उद्देश्य से 100 लीटर प्रतिदिन से अधिक दुग्ध संकलन करने वाली अथवा 60 से अधिक सदस्यों वाली लगभग सभी समितियों में इलेक्ट्रानिक फेट परीक्षण सुविधा उपलब्ध कराई गई है। समितियों का चयन कर आवश्यकतानुसार ईएमटी (Electronic Milko Testers) तथा डीपीएमसीयू (Data Processing Milk Collection Units) की स्थापना की गई है।
- पचामा (सीहोर) तथा मांगलिया (इन्दौर) में कार्यरत पशु आहार संयंत्रों की क्षमता 100 मै0टन प्रतिदिन पर बढाकर 150 मै.टन प्रतिदिन की गयी है । बंडोल जिला सिवनी में 50 मैट्रिक टन प्रतिदिन की क्षमता का पशु आहार संयंत्र स्थापित किया गया है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1982 के बाद प्रदेश में यह संयंत्र स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त सागर तथा शिवपुरी में 100–100 मे. टन क्षमता के नवीन पशु आहार संयंत्रों की स्थापना की गई है।
- पशुओं की पाचन प्रणाली में सुधार, दुग्ध उत्पादन वृद्धि तथा समय पर गर्भाधान हेतु राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड द्वारा प्रदेश की मिनरल मैपिंग के आधार पर पशुओं हेतु विशिष्ट फार्मूले के मिनरल मिक्सचर का उत्पादन प्रारम्भ किया गया है । वर्तमान में भोपाल (पचामा) में 12,000 किलो प्रतिदिन की उत्पादन क्षमता का संयंत्र कार्यरत है।
- प्रदेश के पशुधन को उच्च गुणवत्ता का चारा उपलब्ध कराने की दृष्टि से पचामा, (सीहोर) में बायपास प्रोटीन एवं मिनरल मिक्स्चर संयंत्र की स्थापना की गई है।

- भोपाल दुग्ध संघ द्वारा संयंत्र क्षमता 1.50 लाख प्रतिदिन से बढाकर 3.00 लाख लीटर प्रतिदिन की गई है । इसी प्रकार इन्दौर दुग्ध संघ द्वारा संयंत्र क्षमता 2.00 लाख लीटर प्रतिदिन से बढाकर 2.60 लाख लीटर प्रतिदिन की गई है ।
- दुग्ध शीतलीकरण क्षमता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 376 नवीन बल्क मिल्क कूलर स्थापित किए जा चुके हैं।
- बुन्देलखण्ड विशेष डेयरी परियोजना अन्तर्गत 561 ग्रामों में दुग्ध सहकारी समितियां गठित की गई हैं तथा इनसे प्रतिदिन लगभग 31 हजार लीटर दूध संकलित किया जा रहा है । सागर में 20 हजार लीटर प्रतिदिन क्षमता का संयंत्र प्रारंभ हो गया है एवं पूर्व में बन्द हुए टीकमगढ के जतारा दुग्ध शीतकेन्द्र को भी पुनः प्रारंभ किया गया है ।
- सितंबर 2014 में केसर दूध का निर्माण एवं विक्रय प्रारंभ किया गया, जबकि अक्टूबर 2014 में दीपावली से रसगुल्ला, गुलाबजामुन तथा काजू कतली का निर्माण एवं विक्रय प्रारंभ किया गया। इसी प्रकार 1 दिसंबर 2015 से मिल्क केक का निर्माण एवं विक्रय प्रारंभ किया गया। मार्च 2015 में सांची ठंडाई का उत्पादन तथा विक्रय भी प्रारंभ किया गया ।
- प्रदेश के समस्त दुग्ध संघ आईएसओ 9001 से प्रमाणीकृत कराए गए। भोपाल दुग्ध संघ को पर्यावरण प्रबंधन हेतु आईएसओ 140001 तथा खाद्य सुरक्षा प्रबंधन प्रमाणीकरण आईएसओ 22001 प्राप्त ।
- आचार्य विद्यासागर गौ संवर्धन योजना प्रारंभ की गई इसके अंतर्गत सहकारी डेयरी कार्यक्रम अन्तर्गत महिला सशक्तिकरण तथा महिलाओं की सहभागिता बढाने के विशेष प्रयास किए जा रहे है। ग्रामों में महिला स्वसहायता समूहों के माध्यम से अब तक निर्धन वर्ग की 9,834 महिला हितग्राहियों को 18,740 उन्नत नस्ल के पशु प्रदाय किए गए हैं।
- दुग्ध संघों द्वारा निर्मित किए जा रहे उत्पादों के निर्यात हेतु महानिदेशक, विदेश व्यापार, भारत सरकार, कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण तथा एक्सपोर्ट इंस्पेक्शन कौंसिल ऑफ इंडिया के अंतर्गत पंजीयन प्राप्त।
- एपीडा के सहयोग से एमपीसीडीएफ द्वारा सांची उत्पादों का दिनांक 8 फरवरी से 12 फरवरी 2015 तक दुबई में आयोजित एक्सपो गुल फूड 2015 में भाग लिया गया जो कि विश्व के सबसे बड़े फूड फेस्टिवल में से एक है तथा इसमें लगभग 160 देशों की 7000 कंपनियों द्वारा भाग लिया गया। प्रथम बार सॉची उत्पाद जैसे गुलाब जामुन, रसगुल्ला, काजू कतली, मीठा सुगंधित दूध, दुग्ध चूर्ण, घी तथा टेबल बटर वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किए गए हैं ।
- इंदौर दुग्ध संघ द्वारा भारतीय सेना को 185 मे.टन होल मिल्क पाउडर तथा 30 मे.टन घी प्रदाय तथा भारत तिब्बत सीमा पुलिस से 41.83 मे.टन होल मिल्क पाउडर तथा 24.69 मे.टन घी प्रदाय हेतु क्रय आदेश प्राप्त किया गया ।
- 15 जुलाई 2015 से प्रदेश के 85,933 प्राथमिक विद्यालयों के 45.85 लाख विद्यार्थियों तथा 92,230 आंगनवाड़ियों के 47.88 लाख बच्चों को मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम अंतर्गत सप्ताह में 3 दिन सुगंधित मीठा दूध प्रदाय हेतु दुग्ध संघों द्वारा सुगंधित मीठा दुग्ध चूर्ण प्रदाय किया जा रहा है।